विकल्प संगम प्रक्रिया[1] पर चर्चा के लिए ड्राफ्ट

विकल्पों की तलाश : मुख्य आयाम और सिद्धांत

संवाद के लिए कुछ नोट्स

क्या हम विकल्प संगम प्रक्रिया के तहत मिलजुल कर एक ऐसी समझ व दृष्टि विकसित कर सकते हैं जो आज की प्रभुत्वशाली आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था का बुनियादी विकल्प पेश कर सके? इस तरह की रूपरेखा और दृष्टि हमारे पास पहले से मौजूद विचारों, विश्व दृष्टिकोणों व संस्कृतियों की विरासत से और पुराने या नए जमीनी तजुर्बों से क्या कुछ ले सकती है? प्रस्तुत नोट में हम इसी प्रक्रिया को आगे बढ़ाने और संवाद व चिंतन-मनन को प्रोत्साहित करने के लिए अपनी तरफ से कुछ सुझाव और पेश कर रहे हैं।

इस नोट का मकसद मौजूदा प्रभुत्वशाली व्यवस्था की समालोचना करना नहीं है। हम मानकर चल रहे हैं कि इस बारे में हम सबके पास एक मोटामोटी साझा समझदारी मौजूद है। यह हम सभी भली-भांति समझते हैं कि पारिस्थितिकीय गैर-टिकाऊपन/अस्थिरता, असमानता व अन्याय तथा जीवन और आजीविकाओं के ध्वंस का जो संकट हमारे सामने पैदा हो रहा है उसकी कुछ संरचनात्मक जड़ें रही हैं। केंद्रीकृत और ऊंच-नीच पर आधारित राज्य व्यवस्थाएं, पूंजीवादी कॉरपोरेट नियंत्रण की व्यवस्था, पितृसत्ता तथा सामाजिक व सांस्कृतिक असमानता के अन्य रूप (जिनमें जाति भी शामिल है), शेष प्रकृति एवं स्वयं अपने आध्यात्मिक स्वत्व से कटाव, ज्ञान व प्रौद्योगिकी पर नियंत्रण की अलोकतांत्रिक व्यवस्था, ये सभी इस संरचना के हिस्से हैं। मुमकिन है सभी लोग इन सारी बातों से सहमत न हों मगर फिलहाल हमारी तजवीज़ सिर्फ इतनी है कि हम *समस्या* के पहलुओं पर तो कहीं और भी चर्चा कर सकते हैं; यहां हम इस बारे में ज्यादा ध्यान दें तो बेहतर होगा कि मौजूद संकटों की एक मोटा-मोटी साझा समझदारी के आधार पर आगे बढ़ने के लिए क्या रास्ते और नक्शे ढूंढे जा सकते हैं।

'विकल्प' का क्या मतलब है?

हम जो विकल्प चाहते हैं वे व्यावहारिक गतिविधियों, नीतियों, प्रक्रियाओं, प्रौद्योगिकियों, अवधारणाओं और रूपरेखाओं के रूप में हो सकते हैं। वे समुदायों, शासकीय निकायों, नागर समाज, व्यक्तियों, सामाजिक उद्यमों (यहां इस बारे में बात की जा सकती है कि इस खोजबीन में निजी व्यावसायिक निकायों के लिए भी कोई वाजिब गुंजाइश हो सकती है या नहीं) द्वारा आजमाए जा रहे या प्रस्तावित/प्रसारित किए जा रहे विकल्प हो सकते हैं?

हमारा सुझाव है कि संभावित विकल्पों को निम्नलिखित सिद्धांतों की कसौटी पर कसना बेहतर रहेगा :

क. **पारिस्थितिकीय टिकाऊपन** जिसमें शेष प्रकृति (पारस्थितिकी तंत्र, प्रजातियों, प्रणालियों, चक्रों) और उसकी लोच का संरक्षण करना शामिल है।

ख. **सामाजिक खुशहाली और इंसाफ,** जिसमें भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक स्तर पर परिपूर्ण और संतोषजप्रद जीवन भी शामिल है और जहां सामाजिक-आर्थिक एवं राजनीतिक अधिकारों, लाभों, हकदारी और जिम्मेदारियों में समुदायों और व्यक्तियों के बीच समता का व्यवहार हो।

ग. **प्रत्यक्ष एवं प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र** की ऐसी व्यवस्था जिसमें निर्णय प्रक्रिया मानव समाज की लघुतम इकाई से शुरू हो, जिसमें हर मनुष्य को निर्णय प्रक्रिया में हिस्सेदारी का अधिकार, क्षमता और अवसर मिले, और जो प्रत्यक्ष लोकतंत्र की स्थानीय इकाइयों के प्रति जवाबदेह प्रतिनिधियों के माध्यम से अभिशासन के वृहत्तर स्तर तक जाती हो।

घ. ऐसा **आर्थिक लोकतंत्र** जिसमें स्थानीय समुदायों (उत्पादकों और उपभोक्ताओं सहित, जो अकसर एक-दूसरे में समेकित होते हैं) के पास उतपादन के साधनों, वितरण, विनिमय व बाजारों पर नियंत्रण हो; जहां स्थानीयकरण ही विनिमय की आर्थिक प्रक्रियाओं का मूल सिद्धांत हो और व्यापक व्यापारिक एवं विनिमय प्रक्रियाएं उसी पर आश्रित हों।

ङ. **सांस्कृतिक विविधता और ज्ञान लोकतंत्र** जिसमें जीने के तरीकों, विचारों और विचारधाराओं की बहुलता को सम्मान मिले और जहां ज्ञान का सृजन, संचरण और सदुपयोग (परंपरागत/आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहित सभी प्रकार का ज्ञान) सभी की पहुंच के भीतर हो।

बहुत सारी या ज्यादातर मौजूदा कोशिशें संभवतः इन *सारे* लक्ष्यों की पूर्ति नहीं कर सकतीं। लिहाजा, बेहतर होगा कि किसी प्रस्तावित विकल्प को केवल तभी विकल्प माना जाए जब वह उपरोक्त में से कम से कम दो आयामों की पूर्ति करता हो (यानी वह वास्तव में किन्हीं दो लक्ष्यों को साकार करने या प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से उनको पूरा करने की दिशा में बढ़ता हो), और दूसरे आयामों की संभावना के लिए खुला हो। मिसाल के तौर पर, अगर कोई उत्पादक कंपनी आर्थिक लोकतंत्र की कसौटी पर तो खरी उतरती है मगर पारिस्थितिकीय रूप से गैर-टिकाऊ है (और इसकी परवाह भी नहीं करती) और लाभों के नियमन व वितरण में गैर-बराबरी के चलन से चलती है (और इसके बारे में भी परवाह नहीं करती), तो संभवतः उसको विकल्प मानना उचित नहीं होगा। इसी प्रकार, अगर हमारे पास ऐसी अद्‌भुत प्रौद्योगिकी है जो ऊर्जा उपभोग में कटौती ला सकती है मगर इतनी महंगी है कि केवल धनाढ्य वर्ग ही उसका उपयोग कर सकता है तो उसे भी विकल्प मानना मुश्किल होगा (हालांकि इस पर निश्चय ही विचार किया जाना चाहिए कि क्या उसे किसी प्रकार से गरीबों को भी मुहैया कराया जा सकता है?)।

स्वाभाविक है कि अभी तक की चर्चा कुल मिलाकर सिर्फ कुछ संभावनाओं और अंदाजों की तरफ इशारा कर रही है और इस बारे में विस्तृत चर्चा की दरकार है। हमने उपरोक्त उदाहरणों का जिक्र सिर्फ यह संकेत देने के लिए किया है कि किस प्रकार की संभावनाओं को मौजूदा व्यवस्था का आमूल विकल्प माना जा सकता है।

विभिन्न क्षेत्रों में क्या विकल्प होंगे?[२]

समाज, संस्कृति एवं शांति

ऐसे प्रयास जो मानव जीवन के सामाजिक व सांस्कृतिक आयामों को पुष्ट करें। इनमें निम्नलिखित शामिल हैं :

* हमारी सांस्कृतिक विविधता और बहुलता का अंग और आधार रही विजुअल, परफॉर्मिंग एवं अन्य कलाओं, देश भर में उपलब्ध नाना कौशलों व कलाओं, खतरे में पड़ती जा रही या नष्टप्रायः भाषाओं और अन्य विशेषताओं, प्रक्रियाओं को पुनर्जीवित करना और उनका प्रगतिशील सदुपयोग सुनिश्चित करना;
* सामाजिक न्याय व शांति बहाल करने, जाति, वर्ग, जेंडर, नृजातीय, धार्मिक एवं विभिन्न प्रकार की गैर-बराबरियों व असमानता को कम करने तथा उत्पीड़तों और शोषितों के जीवन में प्रतिष्ठा का भाव पैदा करने के लिए सक्रिय चलाए जा रहे संघर्ष और रचनात्मक आंदोलन;
* नैतिक मूल्यों और सोच को रचने और सादगी, ईमानदारी, किफायत और सहिष्णुता के मूल्यों का प्रसार करने के लिए प्रतिबद्ध आंदोलन।

जिन प्रयासों या प्रक्रियाओं में सामाजिक अन्याय और असमानता को बढ़ावा देने वाले सामुदायिक, लैंगिक या ऐसे दूसरे उद्देश्य अथवा रुझान मौजूद हैं या जो अन्य संस्कृतियों व समुदायों को हाशिए पर धकेलने वाले संकुचित राष्ट्रवाद को सींचते हैं, उन्हें विकल्प *नहीं* माना जाएगा।

वैकल्पिक अर्थव्यवस्थाएं और प्रौद्योगिकियां

ऐसे प्रयास जो मौजूदा नवउदारवादी या राज्य प्रभुत्व की अर्थव्यवस्था और विकास के 'तर्क' का विकल्प रचने में मददगार हों :

* लोकतांत्रिक नियंत्रण के आधार पर आर्थिक गतिविधियों का स्थानीयकरण
* उत्पादकों और उपभोक्ताओं के समूह
* स्थानीय मुद्राएं और व्यापार, गैर-मौद्रिक विनिमय और उपहार अर्थव्यवस्था
* पारिस्थितिकीय रूप से संवेदनशील उत्पाद और प्रक्रियाएं
* टिकाऊ उत्पादन व उपभोग
* अभिनव प्रौद्योगिकियां

* ऐसी वृहत्तर आर्थिक अवधारणाएं जो पारिस्थितिकीय सीमाओं का सम्मान करें तथा विकास, जीडीपी और अन्य संकुचित उपायों व संकेतकों की सीमा से आगे जाने वाली इंसानी खुशहाली की संभावनाओं पर केंद्रित हों।

यहां सतही और नकली समाधानों को विकल्प मानना मुश्किल होगा। मसलन, गहन सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं के मुख्यतः बाजार आधारित और तकनीकी समाधान, या 'हरित विकास' किस्म की ऐसी पद्धतियां जो मौजूदा व्यवस्था में ही छिटपुट कतरब्योंत करके आगे बढ़ने की वकालत करती हैं।

आजीविकाएं

सम्मानजनक, पारिस्थितिकीय रूप से टिकाऊ और सार्थक आजीविकाओं और नौकरियों की तलाश जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं :

* ऐसे संतोषप्रद परंपरागत व्यवसायों की निरंतरता और पोषण जिन्हें समुदाय खुद जारी रखना चाहते हैं, जिनमें खेती, चरवाही, वानिकी, मछुवाही, दस्तकारी और प्राथमिक अर्थव्यवस्था के दूसरे पहलू शामिल हैं;
* मैन्युफेक्चरिंग एवं सेवा क्षेत्र में टिकाऊ, इज्जत भरी नौकरियां जहां उत्पादक और सेवा प्रदाता खुद अपनी नियति के स्वामी हों और लाभों का समतापरक बंटवारा होता हो।

इस मद में संभवतः ऐसी परंपरागत या आधुनिक आजीविकाओं को विकल्प मानना मुश्किल होगा जिनका नियंत्रण गैर-श्रमिकों के हाथ में है और वही मजदूरों के शोषण से (मौद्रिक या राजनीतिक स्तर पर) फायदा उठा रहे हैं, भले ही ऐसा उद्यम पारिस्थितिकीय स्तर पर टिकाऊपन का दावा क्यों न करता हो।

आबादी और परिवहन

ग्रामीण और शहरी, दोनों किस्म के इलाकों और आबादियों को जीने और काम करने के लिए टिकाऊ, समतापरक और संतोषप्रद जगह बनाने की जद्दोजहद :

* टिकाऊ स्थापत्य एवं किफायती आवास सुविधाओं में
* बुनियादी अवरचनागत, जल एवं ऊर्जा आवश्यकताओं के स्थानीय उत्पादन में
* जैव विविधता संरक्षण में
* कचरे में कटौती तथा संसाधनों की रीसाइक्लिंग, कुशल और किफायती उपयोग में
* साझा और खुले क्षेत्रों की रक्षा और बहाली में
* आबादियों के विकेंद्रीकृत, सहभागी बजटिंग एवं नियोजन में
* परिवहन के ऐसे टिकाऊ, समतापरक साधन जो सभी की पहुंच के भीतर हों और उन क्षेत्रों को वापस सार्वजनिक नियंत्रण में लेना जिनको निजी वाहनों के इस्तेमाल के लिए छोड़ दिया गया है।

इस प्रसंग में ऐसे महंगे, अभिजात्यवादी मॉडल विकल्प की कसौटी पर खरे नहीं उतर पाएंगे जो पारिस्थितिकीय रूप से तो टिकाऊ हो सकते हैं मगर ज्यादातर लोगों के लिए प्रासंगिक न हों।

वैकल्पिक राजनीति

प्रत्यक्ष सहभागिता पर आधारित जनकेंद्रित अभिशासन और निर्णय प्रक्रिया तथा सामाजिक व पर्यावरणीय न्याय के सिद्धांत पर आधारित प्रयास और पद्धतियां :

* शहरी एवं ग्रामीण इलाकों में स्थानीय गैर-सोपानिक निर्णय प्रक्रिया (प्रत्यक्ष लोकतंत्र)
* जैव-सांस्कृतिक अथवा पारिस्थितिकीय क्षेत्रीय स्तरों पर ऐसे प्रत्यक्ष लोकतांत्रिक संस्थानों के बीच आदान-प्रदान
* मौजूदा राजनीतिक सीमाओं की पुनर्कल्पना ताकि उन्हें पारिस्थितिकीय एवं सांस्कृतिक निरंतरताओं व कड़ियों के और अनुकूल बना सके

* ऐसी साझेदारियां या समुदाय जो स्थानीय एवं अन्य स्तरों पर गैरदलीय राजनीतिक सरोकारों के बारे में फिक्रमंद हों

* प्रत्यक्ष लोकतांत्रिक संस्थानों, जिनमें राजनीतिक दल और राज्य भी शामिल हैं, से प्रतिनिधियों को लेकर बनाए गए राजनैतिक निकायों की जवाबदेही और पारदर्शिता बढ़ाने वाली गतिविधियां तथा सच्चे अर्थों में लोकतांत्रिक राज्य की रचना की ओर बढ़ने वाले आंदोलन

* ऐसी नीतिगत रूपरेखाएं जो उन विकल्पों पर आधारित हों या उन्हें प्रोत्साहित करते हों जिनकी इस नोट के अन्य भागों में चर्चा की गई है।

ज्ञान एवं मीडिया

एक समतापरक एवं पारिस्थितिकीय रूप से टिकाऊ दुनिया के लिए ज्ञान को सशक्तिकरण के स्रोत और क्षमतावर्धक साधन के रूप में इस्तेमाल करने वाले प्रयास :

* विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहन देने और आधुनिक व परंपरागत, औपचारिक व अनौपचारिक तथा शहरी एवं ग्रामीण ज्ञान परिधियों के बीच सूचनाओं के आदान-प्रदान और उनकी सीमाओं को चुनौती देने वाले प्रयास।

* ऐसी प्रक्रियाएं जो सूचनाओं की पहुंच को ऐसे स्थानों पर मुक्त या आसान बना सकें जो आमतौर पर उपेक्षित, 'दुर्गम' माने जाने वाले या अलग-थलग बने हुए हैं।

* ज्ञान को निजी स्वामित्व या निजी नियंत्रण वाली कमॉडिटी की बजाय 'कॉमन्स' का हिस्सा मानना/बनाना।

* ऐसे वैकल्पिक मीडिया प्रयास जो मुख्यधारा के मीडिया में नजरअंदाज कर दिए गए या जान-बूझकर नजरअंदाज किए जा रहे सवालों को उठाते हों, तथा सामर्थ्य बढ़ाने वाली सूचनाओं के प्रसार के लिए मीडिया का अभिनव प्रयोग।

पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी

ऐसे प्रयास जो पारिस्थितिकीय अक्षुण्णता और सीमाओं के सिद्धांतों का सम्मान और प्रोत्साहन करें :

* स्थानीय एवं आधुनिक ज्ञान को सम्मान देते हुए तथा पर्यावरण को स्थानीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर पारिस्थितिकीय पुनसृजन एवं बहाली की आजीविकाओं से जोड़ने वाले जीवन और श्रम का अभिन्न अंग मानते हुए भूमि, जल एवं जैव विविधता का विकेंद्रीकृत संरक्षण।

* प्रदूषण एवं कचरे की समस्या का सामना करने वाले प्रयास।

* 'प्रकृति' की एक वृहत्तर समझदारी जिसमें समाजशास्त्रीय, ऐतिहासिक एवं भौगोलिक फिक्रों के साथ-साथ दूसरी प्रजातियों और प्रकृति के अधिकार जैसे आयामों की परवाह भी शामिल हो।

प्रदूषण की रोकथाम के लिए ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने जैसे सतही पारिस्थितिकीय समाधानों को विकल्प मानना कठिन होगा।

ऊर्जा

मौजूदा केंद्रीकृत, पर्यावरण के लिए विनाशकारी और गैर-टिकाऊ ऊर्जा स्रोतों के विकल्पों की तलाश और प्रोत्साहन पर केंद्रित प्रयास :

* विकेंद्रीकृत पुनर्नवीकरणीय (रिन्युएबल) ऊर्जा स्रोत

* पारिस्थितिकीय रूप से टिकाऊ ऊर्जा तक समतापरक पहुंच

* उत्पादन व वितरण का अधिकतम सदुपयोग, कुशलता में सुधार, लोक संस्थानों को जवाबदेह बनाना और अतार्किक मांग (मसलन ऐश्वर्यपूर्ण उपभोग) पर अंकुश के लिए चलाए जा रहे प्रयास।

इस प्रसंग में ऐसी खर्चीली, अभिजात्यवादी तकनीकियों व प्रक्रियाओं को विकल्प मानना संभव नहीं होगा जिनका अधिकांश लोगों के लिए कोई उपयोग नहीं है।

सीखना सिखाना और शिक्षा

पर्यावरण एवं संस्कृति के साथ, अपने समुदाय के साथ, अपनी आंतरिक आवाज के साथ, और समूची मानवता के साथ मौजूदा या बहाल किए गए संपर्कों को सींचने वाली शिक्षा प्रदान करने वाली परिधियां और अवसर रचने के लिए चलाए जा रहे प्रयास :

* सामूहिक और व्यक्तिगत संभावनाओं व संबंधों की एक ज्यादा परिपूर्ण शृंखला को सींचने वाले प्रयास
* मुख्यधारा के संस्थानों में दी जा रही अलगावपरक, विखंडनवादी, व्यक्तिवादी 'शिक्षा' से उबरने के लिए सक्रिय प्रयास
* औपचारिक व अनौपचारिक, परंपरागत और आधुनिक, स्थानीय और वैश्विक, तथा दिल, दिमाग और हाथ के बीच समन्वय वाली शिक्षा के लिए किए जा रहे प्रयास
* इस तरह की सीख और शिक्षा को सुगम बनाने के लिए राज्य सहित विभिन्न लोक संस्थानों की जवाबदेही सुनिश्चित करना।

स्वास्थ्य एवं स्वच्छता

अच्छी सेहत और सबके लिए स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए चलाए जा रहे प्रयास :

* सबसे पहले तो अस्वास्थ्य की रोकथाम जिसमें पोषक आहार की व्यवस्था करना, स्वस्थ वातावरण को सुलभ बनाना आदि शामिल हैं
* जिनके पास परंपरागत रूप से उपचार सुविधाओं तक पहुंच नहीं रही है उनको उपचारक सुविधाओं तक पहुंच प्रदान करना जिसमें नागरिकों के प्रति राज्य की जिम्मेदारी को जवाबदेही के दायरे में लाना भी शामिल है
* विभिन्न परंपरागत एवं आधुनिक स्वास्थ्य व्यवस्थाओं में समन्वय, स्थानीय/लोक चिकित्सा पद्धतियों, प्राकृतिक उपचार, आयुर्वेद, यूनानी एवं अन्य समग्र अथवा समावेशी चिकित्सा पद्धतियों सहित भारत और अन्य देशों की विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों को फिर से लोकप्रिय बनाना
* स्वास्थ्य व्यवस्था और स्वच्छता तंत्र का समुदाय आधारित प्रबंधन व नियंत्रण।

भोजन एवं पानी

खाद्य एवं जल सुरक्षा व संप्रभुता की दिशा में सक्रिय प्रयास :

* सुरक्षित एवं पोषक आहार का उत्पादन और उसे लोगों की पहुंच में लाना
* भारतीय व्यंजनों की विविधता को बनाए रखना और धीमे आहारों को प्रोत्साहित करना
* खाद्य उत्पादन व वितरण की प्रक्रियाओं पर सामुदायिक नियंत्रण सुनिश्चित करना
* पानी के इस्तेमाल और वितरण को पारिस्थितिकीय दृष्टि से टिकाऊ और समतापरक बनाना
* विकेंद्रीकृत संरक्षण
* पानी को कॉमन्स की परिधि में बनाए रखना
* पानी और गीली भूमियों का लोकतांत्रिक अभिशासन

खालिस अभिजात्यवादी भोजन जो भले ही स्वस्थ या जैविक खाद्य पदार्थों पर आधारित हो, और ऐसे महंगे तकनीकी जल समाधान जिनका ज्यादातर लोगों के लिए कोई इस्तेमाल नहीं हैं, उन्हें संभवतः विकल्प नहीं माना जा सकता।

यहां और कौन से क्षेत्रों और आयामों को जोड़ा जा सकता है?

विकल्पों में कौन से मूल्य और सिद्धांत व्यक्त हो रहे हैं?

व्यावहारिक और अवधारणात्मक विकल्पों में भारी विविधता है और उनमें से किसी को भी एक जगह से दूसरी जगह ले जाकर जस का तस नहीं दोहराया जा सकता क्योंकि हमारे यहां स्थानीय परिस्थितियों में जबर्दस्त विविधता रही है। फिर भी, इन प्रयासों के पीछे मौजूद सबसे बुनियादी, महत्वपूर्ण, साझा मूल्यों व सिद्धांतों को चिन्हित जरूर किया जा सकता है। ऐसे मूल्यों व सिद्धांतों की एक शुरुआती और कच्ची-पक्की फेहरिस्त इस प्रकार है :

पारिस्थितिकीय अक्षुण्णता एवं प्रकृति के अधिकार

पूरी पृथ्वी पर समूचे जीवन को आधार प्रदान करने वाली पारिस्थितिकीय प्रक्रियाओं (खासतौर से वैश्विक ताजे पानी के चक्र), पारिस्थितिकीय तंत्रों और जैव विविधता की कार्यात्मक अक्षुण्णता।

प्रकृति तथा सभी प्रजातियों (जंगली और पालतू, दोनों) का उन परिस्थितियों में बने रहने और फलने-फूलने का अधिकार जिनमें वे विकसित हुए हैं तथा समग्र 'जीवन समुदाय' के लिए सम्मान

समता और न्याय

वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों में सभी मनुष्यों को किसी दूसरे व्यक्ति की पहुंच को ठेस पहुंचाए बिना इंसानी खुशहाली (सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, पारिस्थितिकीय) के लिए आवश्यक परिस्थितियों तक समान पहुंच प्रदान करना; मनुष्यों तथा प्रकृति के अन्य तत्वों के बीच समता; तथा सबके लिए सामाजिक, आर्थिक व पर्यावरणीय न्याय कर आश्वासन।

सार्थक सहभागिता का अधिकार और दायित्व

अपने जीवन को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण निर्णयों में प्रत्येक नागरिक व समुदाय का सार्थक सहभागिता का अधिकार और एक रेडिकल, सहभागी लोकतंत्र के हिस्से के रूप में ऐसी सहभागिता की सामर्थ्य प्रदान करने वाली परिस्थितियों का अधिकार।

ऐसे अधिकारों के साथ-साथ प्रत्येक नागरिक और समुदाय की जिम्मेदारी है कि वह पारिस्थितिकीय टिकाऊपन एवं सामाजिक-आर्थिक समता के सिद्धांतों के आधार पर सार्थक निर्णय प्रक्रिया सुनिश्चित करें।

विविधता और बहुलवाद

टिकाऊपन और समता के सिद्धांतों के अनुरूप पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्रों की विविधता, प्रजातियों और जीन्स (जंगली और पालतू, दोनों), जीने के तरीकों, ज्ञान प्रणालियों, मूल्य मान्यताओं, आजीविकाओं, तथा राजनयों (जिनमें देशी समुदाय और स्थानीय समुदाय भी शामिल हैं) की विविधता को बनाए रखना।

साझा कॉमन्स एवं एकजुटता

सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक एवं पारिस्थितिकीय कॉमन्स पर आधारित सामूहिक एवं पारस्परिक सोच व क्रियाकलाप जिनमें ऐसी सामुदायिता के प्रति साझा संरक्षण और व्यक्तिगत स्वतंत्रता व अभिनव प्रयासों के लिए सम्मान तथा अंतर्वैयक्तिक और अंतर्सामुदायिक एकजुटता पर जोर दिया जाए।

लोच और अनुकूलनशीलता

परिवर्तन की बाहरी और आंतरिक शक्तियों का सामना करने के लिए, पारिस्थितिकीय टिकाऊपन व समता बनाए रखने के लिए आवश्यक लचीलेपन को बनाए रखने, अपनाने और विकसित करने की समुदायों और समूची मानवता की सामर्थ्य जिसमें प्रकृति के लचीलेपन को साकार करने वाली परिस्थितियों के पति सम्मान साथ बढ़ना शामिल है।

आनुषंगिकता एवं पारिस्थितिकीय क्षेत्रवाद

स्थानीय ग्रामीण एवं शहरी समुदाय (जो इतने छोटे हों कि सभी सदस्य निर्णय प्रक्रिया में हिस्सा ले सकें) अभिशासन की बुनियादी इकाई हों, वे जैव क्षेत्रीय एवं पारिस्थितिकीय क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय संस्थानों में परस्पर संबद्ध हों और आधारभूत इकाइयों के प्रति जवाबदेह हों।

सादगी और पर्याप्तता

अधिक से अधिक की चाह में दौड़ते रहने की बजाय जीवन और आजीविका के लिए जो कुछ पर्याप्त है उस पर आश्रित रहने और उससे संतुष्ट रहने की नैतिकता।

श्रम और कार्य का सम्मान

सभी तरह के शारीरिक और बौद्धिक श्रम का सम्मान और किसी भी व्यवसाय और काम को निहित रूप से किसी दूसरे काम के मुकाबले श्रेष्ठतर या हेय न समझना; सभी काम सम्मानजनक, सुरक्षित और शोषणमुक्त हों।

क्या इन सारी चीजों को मिलाकर एक समग्र वैकल्पिक विश्व दृष्टिकोण बन सकता है?

क्या इस खोजबीन में कोई समग्र विश्व दृष्टिकोण और रूपरेखा उभर सकती है जो मौजूदा प्रभुत्वशाली व्यवस्थाओं को कड़ी चुनौती दे सके? इसके लिए हमें निम्नलिखित सवालों को संबोधित करना होगा :

हमारे देश में पिछले हजारों सालों के दौरान जो प्राचीन या प्रारंभिक व्यवहार व अवधारणाएं विकसित हुई हैं वे से किस हद तक अभी भी प्रासंगिक हैं... और उनको सांप्रदायिक या नवउदारवादी शक्तियों द्वारा हथिया लेने की कितनी आशंका दिखायी देती है?

प्रमुख विचारधाराओं और सीखों (गांधी, मार्क्स, अंबेडकर, ऑरविंदो, टैगोर... एवं अन्य) में क्या कुछ है जिसे लेकर हम आगे बढ़ सकते हैं?

प्रायः प्रभुत्वशाली अभिव्यक्तियों के शोर में दब जाने वाले आदिवासी/देशज/जनजातीय/दलित विश्व दृष्टिकोणों और व्यवहारों से हम किस तरह और क्या कुछ सीख सकते हैं?

इसी प्रकार, अन्य विशेष दृष्टिकोणों, जैसे नारीवादी दृष्टिकोण, से हम क्या सीख सकते हैं?

हमें दुनिया भर के दूसरे जनसमुदायों और सभ्यताओं से क्या सीखना चाहिए?

इन सारी चीजों को हम भारत के युवाओं और शेष जनता के लिए किस तरह प्रासंगिक बना सकते हैं? और अंत में, समूचे भारत में विकल्पों के लिए चल रहे अलग-थलग, खंडित और विविध संघर्षों को किसी साझा जमीन व दृष्टि में बांधने के लिए क्या प्रक्रिया अपनाई जा सकती है?

[1] अपनी टिप्पणियों और संवाद के लिए आप अशीष कोठारी (chikkikothari@gmail.com) से संपर्क कर सकते हैं।
[2] यह भाग www.vikalpsangam.org पर अपनाए गए दिशानिर्देशों पर आधारित है। इसमें अन्य आयाम और क्षेत्र भी जोड़े जा सकते हैं।